
अर्थशास्त्र का स्वरूप
और महत्व

अर्थशास्त्र का स्वरूप और महत्व :
—एक निबंध

[AN ESSAY
ON
THE NATURE & SIGNIFICANCE OF ECONOMIC SCIENCE]

अर्थशास्त्र का स्वरूप और महत्व — एक निबन्ध —

लेखक

मिओनेल रॉबिन्स

लंदन विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र के प्राध्यापक

अनुवादक

जगदीशचन्द्र वर्मा

भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय की मानक ग्रन्थों
की प्रकाशन-योजना के अन्तर्गत प्रकाशित

प्रकाशक

साहित्य संगम, आगरा

© भारत सरकार

प्रथम संस्करण 1966

भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय की मानक-ग्रन्थों की प्रकाशन-योजना के अंतर्गत इस पुस्तक का अनुवाद और पुनरीक्षण वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की देखरेख में किया गया है और इस पुस्तक की 1000 प्रतियाँ भारत सरकार द्वारा क्रय की गयी हैं।

प्रकाशक :

साहित्य संगम

प्रसाद पारिजात, सिटी स्टेशन रोड, आगरा-3

मुद्रक :

बी एजुकेशनल प्रेस,

बाँके विलास, सिटी स्टेशन रोड, आगरा-3

प्रस्तावना

हिंदी और प्रादेशिक भाषाओं को शिक्षा के माध्यम के रूप में अपनाने के लिए यह आवश्यक है कि इनमें उच्चकोटि के प्रामाणिक ग्रंथ अधिक से अधिक संख्या में तैयार किए जाएँ। भारत सरकार ने यह कार्य वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के हाथ में सौंपा है और उसने इसे बड़े पैमाने पर करने की योजना बनाई है। इस योजना के अन्तर्गत अंग्रेजी और अन्य भाषाओं के प्रामाणिक ग्रंथों का अनुवाद किया जा रहा है तथा मौलिक ग्रंथ भी लिखाए जा रहे हैं। यह काम अधिकतर राज्य-सरकारों, विश्वविद्यालयों तथा प्रकाशकों की सहायता से प्रारंभ किया गया है। कुछ अनुवाद और प्रकाशन-कार्य आयोग स्वयं अपने अधीन भी करवा रहा है। प्रसिद्ध विद्वान और अध्यापक हमें इस योजना में सहयोग दे रहे हैं। अनूदित और नए साहित्य में भारत सरकार द्वारा स्वीकृत शब्दावली का ही प्रयोग किया जा रहा है ताकि भारत की सभी शिक्षा-संस्थाओं में एक ही पारिभाषिक शब्दावली के आधार पर शिक्षा का आयोजन किया जा सके।

‘अर्थशास्त्र का स्वरूप और महत्व’ नामक पुस्तक आयोग द्वारा प्रस्तुत की जा रही है। इसके मूल लेखक श्री लिओनेल रॉबिन्स, अनुवादक श्री जगदीशचन्द्र वर्मा तथा पुनरीक्षक श्री शिवकुमार वर्मा हैं। आशा है भारत सरकार द्वारा मानक ग्रंथों के प्रकाशन संबंधी इस प्रयास का सभी क्षेत्रों में स्वागत किया जाएगा।

नि.ह।म.क.११" १०१

शिक्षा मंत्रालय,
भारत सरकार, नई दिल्ली

अध्यक्ष
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

मूल अंग्रेजी पुस्तक के दूसरे संस्करण की भूमिका

इस निबंध का पहला संस्करण कुछ समय पहले समाप्त हो चुका है परंतु अभी तक इसकी माँग जारी है। प्रकाशक ने इसे फिर से मुद्रित करने का निश्चय किया है। इस अवसर का लाभ उठाते हुए मैंने पहले संस्करण के प्रकाशन के बाद होने वाले अनुभव के आधार पर इसमें कुछ परिवर्तन और संशोधन किए हैं जो बहुत वांछनीय हो गए थे।

इस प्रकार के संशोधन करते समय मैंने इस निबंध की मुख्य विचारधारा में कोई सारवान परिवर्तन करना आवश्यक नहीं समझा है। छठे अध्याय में तुष्टिगुण की व्यक्तिगत तुलनाओं के वैज्ञानिक औचित्य के संबंध में जिन बातों को अस्वीकार किया गया है लोगों ने उनकी बड़ी आलोचना की है। मैं इनके संबंध में या किसी भी अन्य बात के लिए दुराग्रह नहीं दिखाना चाहता परंतु मैं ऐसे लोगों से निवेदन करना चाहता हूँ कि मैं उनके तर्कों से तनिक भी सहमत नहीं हूँ। मेरी यह धारणा है कि विभिन्न व्यक्तियों को भिन्न-भिन्न तुष्टिगुणों का समुच्चयन या तुलना करते समय तथ्यों संबंधी निर्णयों के बजाय मूल्यों संबंधी निर्णय करने पड़ते हैं और ऐसे निर्णय किसी भी वास्तविक विज्ञान के क्षेत्र के बाहर की वस्तु हैं। मेरे आलोचकों ने जो कुछ कहा है मैं उससे यह नहीं मान सकता कि मेरी यह धारणा गलत है। इस दृष्टि से विषय को थोड़ा सा और स्पष्ट करने के लिए कुछ अनुपूरक कथनों के अतिरिक्त मैंने इस अध्याय में कोई परिवर्तन नहीं किए हैं। मैं आशा करता हूँ कि मेरे आलोचक (जिनमें से कुछ लोग यह मान बैठे थे कि मैं वास्तव में बहुत झगड़ालू हूँ) इसको अमिततापूर्ण उपेक्षा नहीं मानेंगे। मैं उनको यकीन दिलाता हूँ कि मैं स्वयं अपने विचारों के प्रति पूर्णतया निश्चित नहीं हूँ। परंतु इनमें से कुछ लोगों द्वारा मेरी इस धारणा तथा मेरे कुछ अन्य प्रसिद्ध साध्यों को “रॉबिन्सियन अर्थशास्त्र” की संज्ञा दिए जाने के बावजूद भी मैं समझता हूँ यह विद्या मेरी दी हुई नहीं है, और जिन प्रसिद्ध लेखकों ने इन विचारों का प्रतिपादन किया है उनसे मुझे यह विश्वास होता है कि कम से कम इस मामले में, मेरी अपनी धारणाओं ने मुझे पथभ्रष्ट बनाने का यत्न नहीं किया है।

दूसरी ओर मेरे बहुत से आलोचकों ने मेरे तर्कों से कुछ ऐसे व्यावहारिक निष्कर्ष निकालने की कोशिश की है जिनका खंडन करने वाला मैं सबसे पहला

व्यक्ति हैं। यह कहा गया है कि क्योंकि मैंने अर्थशास्त्र और अन्य सामाजिक विज्ञानों, जैसे अर्थशास्त्र और नीति-शास्त्र तथा दर्शन शास्त्र की सीमाएँ स्पष्ट रूप से निर्धारित करने का प्रयत्न किया है इसलिए मैं इस मत का समर्थन करता हूँ कि “अर्थशास्त्री को अपने विषय से बाहर किसी और क्षेत्र में दखल नहीं देना चाहिए”। उन कार्यों के बावजूद भी जिनका मुझे डर था और जो बहुत बदनाम हो चुके हैं यह कहा गया है कि मैंने यह मत प्रस्तुत किया है कि “अर्थशास्त्रियों को सभी संभव रास्तों को बताने के अतिरिक्त जिन पर अमल किया जा सकता है, तथा इनका सूक्ष्म और संयत विश्लेषण और विवेचन प्रस्तुत करने के अतिरिक्त इनको कार्यान्वित करने के बारे में और किसी प्रकार का भाग नहीं लेना चाहिए।” मेरे मित्र श्री लिडले फ्रेजर ने एक लेख “हौऊ डू बी वांट इकोनोमिस्ट्स टू बीहेव” द्वारा मेरे ऊपर यह प्रभाव डालने का प्रयत्न किया है कि मुझे अर्थशास्त्रियाँ स अधिक सामाजिक आचरण की आशा करनी चाहिए। जब इतने लोगों ने मेरी बातों को गलत समझा है तो मैं समझता हूँ इसमें मेरा ही दोष है कि मैं क्यों अपने विचारों में इतनी स्पष्टता नहीं ला पाया हूँ। वस्तुतः मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि मैंने ऊपर उद्धृत की गई बात से बिल्कुल उलट बात कही है और अपनी ओर से मैंने उस पर पूरा बल देने का यत्न किया है। पाँचवें अध्याय के अनुभाग 6 की एक पादटिप्पणी में मैंने स्पष्ट रूप से कहा है कि “मैं अनुमान लगाने में अत्यधिक सतर्कता के प्रयोजन से नहीं बल्कि अपने कथन को अधिक सही बनाने की दृष्टि से इस बात पर बल दे रहा हूँ” और मैंने इस बात पर विशेष बल दिया है कि “अर्थशास्त्री अन्य समाजशास्त्रियों से कहीं अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।” इसी प्रकार छठे अध्याय के अनुभाग 5 में मैंने यह कहा है कि “इस सबका तात्पर्य यह नहीं है कि अर्थशास्त्रियों को नीतिशास्त्र संबंधी प्रश्नों से कोई बास्ता नहीं रखना चाहिए, चूँकि वनस्पतिशास्त्र का सौंदर्यशास्त्र से कोई संबंध नहीं होता इसलिए यह तर्क नहीं दिया जा सकता कि बगीचे के विन्यास के संबंध में अपना कोई मत नहीं रखना चाहिए। परंतु इसके विपरीत हम चाहते हैं कि अर्थशास्त्रियों ने इन विषयों का बहुत समय तक तथा व्यापक रूप में मनन किया हो क्योंकि इसी प्रकार से वे उन समस्याओं के निश्चित उद्देश्यों के अभिप्रेत अर्थों को समझ सकेंगे जो उनके सामने सुलझाने के प्रयोजन से रखी जाती हैं, इसमें मैं केवल एक बात और जोड़ सकता हूँ कि मैं श्री फ्रेजर के इस कथन से पूर्णतया सहमत हूँ कि “यदि कोई अर्थशास्त्री केवल अर्थशास्त्र का ज्ञान रखता हो और उसमें भी अधिक प्रतिभाशाली न हो—और अपने बारे में यह धारणा करना कि हम सचमुच प्रतिभाशाली हैं कितनी मूर्खता होगी—तो उसे केवल एक कूपमंडूक ही समझना चाहिए।” मैं इस बात से भी सहमत हूँ कि अकेला अर्थशास्त्र जीवन की बहुत सी महत्वपूर्ण समस्याओं का कोई हल नहीं बन

सकता। मैं मानता हूँ कि केवल अर्थशास्त्र की शिक्षा एक अधूरी शिक्षा है। मैं बड़ी देर तक ऐसी संस्थाओं में अध्यापन कार्य करता रहा हूँ जिनमें ऐसी बातों को एक शिक्षाशास्त्रीय स्वयंसिद्धि माना जाता है कि अगर मैं किसी बात पर बल नहीं देता हूँ तो इसका कारण यह है कि मैं यह पूर्वधारणा कर लेता हूँ कि इस बात को प्रत्येक व्यक्ति पहले ही स्वीकार कर चुका है। मैंने जिस बात पर बल दिया है वह यह है कि विभिन्न विषयों के अनेक प्रकार के साध्यों को अलग-अलग रखना चाहिए ताकि हम प्रत्येक कदम पर यह जान सकें कि हम किस आधार पर फैसला कर रहे हैं। मैं यह नहीं मानता कि इस बात में श्री फ्रेजर से मेरा कोई वास्तविक मतभेद है।

ठीक इसी तरह मैं यह कहना चाहूँगा कि मेरी इस बात का यह अर्थ निकालना भी सरासर गलत होगा कि क्योंकि मैंने आर्थिक परिवर्तनों को आँकने के लिए तथाकथित मात्रिक संबंधों के पीछे अनेक प्रकार की रुढ़िगत मान्यताओं के बारे में विचार करने पर बल दिया है इसलिए मैं इस प्रकार की 'प्रक्रिया' के विरुद्ध हूँ। मुझे यह एक बहुत महत्वपूर्ण बात दिखाई देती है कि राष्ट्रीय आय या राष्ट्रीय पूंजी जैसे समुच्चयों की गणना करते समय हमें स्पष्ट रूप से यह मान लेना चाहिए कि हम ऐसी पूर्वधारणाएँ कर रहे हैं जो वैज्ञानिक विश्लेषण पर आधारित न होकर अनिवार्यतया रुढ़ हैं। परंतु जैसा कि मैंने इस निबंध में (पृष्ठ 52 और पृष्ठ 56) बल देकर कहा है कि इसका कतई यह अर्थ नहीं लेना चाहिए कि यदि हम अपनी प्रक्रिया में निहित सभी बातों के प्रति सचेत हों तो इस प्रकार की गणनाओं के बारे में किसी प्रकार की आपत्ति की जा सकती है। इसके विपरीत यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि भूतकाल में इस प्रकार की बातों का पर्याप्त अध्ययन नहीं किया गया है और भविष्य में इन विषयों के बहुत बढ़ने की काफी आशा की जा सकती है। फिर भी वस्तुतः इस बात को मान लेने में, और इस विचार में कोई विरोधाभास नहीं है, कि हमें प्रत्येक कदम पर यह जान लेना चाहिए कि हम कहाँ पर केवल तथ्यों को दर्ज कर रहे हैं और कहाँ पर मनमाने मापदंडों से इनका मूल्यांकन कर रहे हैं। क्योंकि इन बातों में प्रायः भ्रम होता रहता है इसलिए मैं अब भी इस बात पर बल देता हूँ कि इन दोनों के अंतर को जान लेना अनुचित नहीं होगा।

परंतु इस निबंध के कुछ भाग ऐसे भी हैं जिनको दोहराना बहुत आवश्यक हो गया था। मैं अर्थशास्त्र के सामान्यीकरणों की प्रकृति के अध्याय से कभी संतुष्ट नहीं हुआ हूँ। जहाँ तक मैं समझता हूँ इस मामले में कोई मूलभूत परिवर्तन नहीं हुआ है परंतु फिर भी मैं यह सोचता हूँ कि कुछ आधुनिक आविष्कारों के महत्व का यथासंभव स्पष्ट चित्रण करने की उत्सुकता के कारण मैं कुछ स्थानों पर पूरा बल नहीं दे पाया हूँ और मैंने तर्कशास्त्र के कुछ शब्दों का शिथिलता-

पूर्वक प्रयोग कर दिया है जो मेरे निबंध के प्रसंग से बाहर भ्रांति का कारण बन सकते हैं। सच तो यह है कि कई आलोचकों ने मेरे ऊपर कोरा पांडित्य प्रदर्शित करने का लांछन लगाया है और कई आलोचकों ने मुझे “व्यवहारवादी” ठहराया है। इससे मुझे यह भ्रम हो गया है कि शायद मैं इन दो चरम सीमाओं के बीच वस्तुस्थिति को अधिक स्पष्ट नहीं कर पाया हूँ। इसलिए मैंने इस अध्याय के अधिकांश भागों को दुबारा लिखा है और मैंने इसको बढ़ाकर इसमें कुछ अधिक जटिल विषयों को भी शामिल कर दिया है, जैसे “शुद्ध तर्कनापरक भ्रांति” का क्या तात्पर्य है, आदि बातें। पहले संस्करण में इनको मैंने इसलिए छोड़ दिया था ताकि निबंध का कलेवर अधिक न बढ़ जाए किंतु मुझे यह आंशका हो रही है कि इससे प्रस्तुत पुस्तक का यह भाग दुरुह और विवादास्पद बन गया है। यद्यपि मैं इसकी त्रुटियों से भलीभांति परिचित हूँ तथापि अपने पहले प्रयास की तुलना में मुझे इसी में संतोष का अनुभव होता है कि मैं ऐसे विषयों पर केवल अप्रत्यक्ष रूप से ही अपने विचार व्यक्त करूँ। पाँचवें अध्याय का पहला अनु-भाग भी दुबारा लिखा गया है और मैंने दूसरे अनुभाग में भी कुछ नए पंरे जोड़े हैं जिनमें मैंने पिछले अध्याय में उल्लिखित गुणात्मक नियमों और सांख्यिकीय विश्लेषण के नियमों की तुलना और महत्व पर आस्था रखने के कारणों को थोड़े विस्तार से बताया है। मैंने चौथे और पाँचवें अध्याय में भी कुछ छोटे छोटे अनुभाग जोड़े हैं जिनमें स्थैतिक और गत्यात्मक अर्थशास्त्र के परस्पर संबंधों और आर्थिक विकास के सिद्धांतों की संभावनाओं पर चर्चा की गई है—ये ऐसे विषय हैं जिनके बारे में पर्याप्त अनावश्यक भ्रांति फैली हुई दिखाई देती है। मैं आशा करता हूँ कि मैंने जो परिवर्तन किए हैं वे मेरे मित्रों प्रोफ़ेसर एफ० ए० फॉन हेय, डा० पी० एन० रोज़नटाइन रोडन, और डा० ए० डब्ल्यू० स्टैनियर को भी स्वीकार्य होंगे। मैंने इन लोगों की सलाह और समालोचना से इन कठिन विषयों के बारे में बहुत कुछ सीखा है जिसके लिए मैं इनका बड़ा आभारी हूँ। परंतु इस पुस्तक में जो भी भूलें हुई हैं उनके लिए उनका कोई उत्तरदायित्व नहीं है।

मुझे इस बात की बड़ी चिंता रही है कि प्रोफ़ेसर आर० डब्ल्यू० साऊटर ने मेरी पुस्तक के बारे में जो आक्षेप लगाए हैं उनका क्या किया जाए? मैंने प्रोफ़ेसर साऊटर के आक्षेपों को बड़ी दिलचस्पी और आदर से पढ़ा है। जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ कि उन्होंने मेरे रवैये को जिस प्रकार से “वस्तुवादी” बताया है मैं उससे तनिक भी सहमत नहीं हूँ। जहाँ तक उनके तर्कों के इस भाग का संबंध है उन्हें मेक्सवेवर का खंडन करना चाहिए मेरा नहीं, और मेरा विचार है मेक्सवेवर अब भी अक्राट्य है। परंतु जहाँ तक उन्होंने स्थैतिक अर्थशास्त्र के प्रारंभिक और छोटे छोटे सामान्य नियमों की अधिक चिंता न करने के बारे में

तर्क दिए हैं मैं उनमें अधिकांश से सहर्ष सहमत हूँ। परन्तु जहाँ पर उनका और मेरा मतभेद शुरू होता है वह उनकी यह धारणा है कि इस काम के लिए सूक्ष्म विश्लेषण और आवश्यक स्थैतिक आधार को व्यर्थ मानने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं आधुनिक गणितीय भौतिकी और खगोल विज्ञान से बहुत अधिक परिचित नहीं हूँ परन्तु मुझे संदेह है कि उन्होंने जिन प्रसिद्ध वैज्ञानिकों से ऐसी अपील की है—क्या वे गणितीय अर्थशास्त्र के तरीकों के बारे में उनके मत से, जो प्रत्यक्षतः बहुत ही निम्न कोटि का है, सहमत होंगे? भले ही वे लोग यह महसूस करते हों कि अर्थशास्त्र के नियमों की सहायता से निकाले जाने वाले निष्कर्ष अभी बहुत ही प्रारंभिक स्थिति में हैं फिर भी वे कभी उनके विचारों से सहमत नहीं हो सकते। इस संबंध में प्रोफेसर नाइट द्वारा जो कुछ पहले कहा जा चुका है मैं उससे लगभग पूर्णतया सहमत हूँ।¹ मैं यह अनुभव करता हूँ कि जहाँ तक इस निबंध का संबंध है इसकी व्याख्या में अनवधानता से की गई एक या दो कटु उक्तियों से प्रोफेसर साऊटर को इतना क्रोध आ गया है कि वह वास्तव में मेरे तर्कों को बहुत ज्यादा गलत समझने लगे हैं। कदाचित् अन्यथा उन्हें ये तर्क इतने गलत न लगते। मुझे इस बात का बड़ा खेद है। परन्तु मेरी समझ में नहीं आता कि मैं इस संबंध में क्या कर सकता हूँ। एक दो स्थानों पर मैंने अपनी बातों को अधिक स्पष्ट करने का यत्न किया है परन्तु ऐसी सभी भ्रांतियों से अपनी रक्षा करने का यह अर्थ होगा कि मुझे व्यक्तिगत रूप से इतनी क्षमा याचना करनी पड़ेगी कि यह निबंध जो पहले ही बहुत लंबा हो गया है, इनसे और भर जाएगा तथा यह बिलकुल अपठनीय बन जाएगा। मैं किसी के प्रति अशिष्टता नहीं दिखाना चाहता और मैं आशा करता हूँ, यदि मुझे इस समय हाथ में लिए गए बहुत से कामों से समय मिला तो मैं प्रोफेसर साऊटर से अवश्य यह निवेदन करूँगा कि मेरी यह धारणा निराधार नहीं है कि मुझे समझने में उन्हें गलतफहमी हुई है।

शेष भागों में मैंने बहुत थोड़े परिवर्तन किए हैं। मैंने कुछ ऐसी पाद-टिप्पणियों को निकाल दिया है जो अब असंगत हो चुकी हैं। इसी प्रकार मैंने कुछ गर्वोक्तियों को भी निकाल दिया है जो कि आजकल के मूड के अनुकूल नहीं हैं। परन्तु सिवाय इस बात के कि मैं इसे नए सिरे से लिख डालूँ मेरे पास इस बात को छिपाने के लिए और कोई चारा नहीं है कि मैंने यह निबंध बहुत पहले लिखा था। चाहे यह बात लोगों को अच्छी लगे या बुरी मैं यह नहीं छिपाऊँगा कि इस पुस्तक के अधिकांश भागों की कल्पना और उनका प्रारूप प्रकाशन से

¹ "इकोनोमिक साइन्स इन रिसेंट डिसकशन," अमेरिकन इकोनोमिक रिव्यू, भाग 24, पृष्ठ 225-238।

बहुत समय पहले तैयार कर लिया गया था और यद्यपि मैं सोचता हूँ कि अब इसे दुबारा लिखकर छपवाना चाहिए तथापि इसमें जितना समय लगेगा उसको देखते हुए मैं इतना थम करना ठीक नहीं समझता। अतः इसे एक बार फिर वैसे ही अपरिमाजित और अपरिपूर्ण रूप में पाठकों के सामने रखने का साहस कर रहा हूँ।

द्वि संवन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स
मई, 1935

लिओनेल रॉबिन्स

मूल अंग्रेजी पुस्तक के पहले संस्करण की भूमिका

इस निबंध के दो उद्देश्य हैं। सर्वप्रथम, इसमें अर्थशास्त्र की विषय-वस्तु से संबंधित बातों और इस विज्ञान के सामान्यीकरणों की प्रकृति का सूक्ष्म विवेचन करने का प्रयास किया गया है। दूसरे, इसमें वास्तविक आर्थिक घटना-चक्र की व्याख्या करने और उसे राजनीतिक नीतियों का आधार बनाने की दृष्टि से इन सामान्यीकरणों की सीमाओं और महत्व पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है। आजकल, पिछले 60 वर्षों से अर्थशास्त्र के सिद्धांतों में विकास के परिणामस्वरूप एक बार विचारणीय विषय का स्पष्ट उल्लेख कर देने के बाद, इन नियमों के कथन में कोई गहरा मतभेद होने की गुंजाइश नहीं रही है। फिर भी, क्योंकि सदा ऐसा स्पष्ट कथन करना असंभव है, इसलिए इनके बारे में अनेक प्रकार की भ्रांतियाँ बनी हुई हैं और अर्थशास्त्रियों के कर्तव्यों और उनके कामों की प्रकृति और सीमाओं के बारे में बड़े गलत विचार फैले हुए हैं। इन सब कारणों से अब भी अर्थशास्त्र की प्रतिष्ठा पर प्रहार होता रहता है और इस विज्ञान का पूरा-पूरा उपयोग नहीं किया जाता है। यह निबंध ऐसी भ्रांतियों को दूर करने के लिए लिखा जा रहा है। अर्थात् इसमें यह स्पष्ट करने का यत्न किया गया है कि अर्थशास्त्र में किन बातों की चर्चा होती है और इन चर्चाओं के फलस्वरूप उससे क्या-क्या आशाएँ करनी उचित होंगी। अतः एक ओर तो इस निबंध को विशुद्ध सैद्धांतिक पद्धतियों और पूर्वधारणाओं की टीका मानना चाहिए और दूसरी ओर इसे व्यावहारिक अर्थशास्त्र की पूर्वपीठिका मानना चाहिए।

इस निबंध के उद्देश्य के लिए केवल व्यापक विचारों पर ही ध्यान दिया जा सकता है। परंतु फिर भी मैंने इसमें सब जगह जहाँ तक हो सका है वास्तविकता से संपर्क बनाए रखने का प्रयत्न किया है। मैंने दार्शनिक सूक्ष्मताओं को सदा अपने क्षेत्र के बाहर की बात माना है और अपनी व्यावसायिक क्षमता से परे की वस्तु माना है। मैंने अपने साध्यों के प्रतिपादन के लिए विषय की सर्वश्रेष्ठ आधुनिक पुस्तकों में दी गई वास्तविक सामग्री को ही अपना आधार माना है। इस प्रकार की पुस्तक में, जो एक अर्थशास्त्री द्वारा दूसरे अर्थशास्त्रियों के लिए लिखी गई है, विशेष समस्याओं का सर्वमान्य समाधान प्रस्तुत करने के लिए मैंने निरन्तर अन्य पुस्तकों के उद्धरण देकर ही अपनी बात को सिद्ध करना

अच्छा समझा है। अर्थशास्त्र के स्वरूप, अर्थात् उसे कैसा होना चाहिए यह सिद्ध करने के लिए मैंने किसी कोरी कल्पना की सहायता लेने की कोशिश नहीं की है। साथ ही मैंने इस निबंध को संक्षिप्त रखने का भी प्रयास किया है। मेरा उद्देश्य एक दृष्टिकोण को सामने रख देना मात्र रहा है। मैंने उसकी विस्तृत चर्चा करने का प्रयत्न नहीं किया है। ऐसा करने के लिए मुझे बहुत सी ऐसी सामग्री को भी छोड़ देना पड़ा है जिसे मैंने मूलतः इकट्ठा किया था, परंतु संक्षिप्त रहने के लिए मैंने इसे छोड़ना वांछनीय समझा है। मैं आशा करता हूँ कि बाद में मैं अर्थशास्त्र के सिद्धांतों के बारे में कोई सामान्य पुस्तक लिखूंगा और उसमें यहाँ पर उल्लिखित सिद्धांतों की ओर विस्तृत चर्चा कर सकूंगा।

इस पुस्तक में व्यक्त किए गए विचारों के लिए मैं मौलिकता का दावा नहीं करता। हाँ, मैं यह अवश्य निवेदन करना चाहूँगा कि एक दो स्थानों पर मैं कुछ सिद्धांतों के बारे में, जो आज तक स्पष्ट रूप से प्रतिपादित नहीं किए जा सके थे, अधिक सबल व्याख्याएँ दे सका हूँ। परंतु मुख्य रूप से मेरा उद्देश्य ऐसी प्रस्थापनाओं को, जो अधिकतर आधुनिक अर्थशास्त्रियों की सामान्य सम्पत्ति रहे हैं, यथासंभव सरल शब्दों में व्यक्त करता रहा है। इसके लिए मैं 'स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स' में अपने सहयोगियों और छात्रों के साथ होने वाली चर्चाओं के लिए उनका विशेष रूप से आभारी हूँ। बाकी के स्रोतों के लिए मैंने पाद-टिप्पणियों में आभार प्रदर्शित कर दिया है। इन सब लेखकों के प्रति मैं मुख्य रूप से सजग हूँ। परंतु मैं प्रोफेसर लुडविग वॉन माइज़िज़ की पुस्तकों और स्वर्गीय फिलिप विकस्टीड की पुस्तक 'कामनसेंस ऑफ पालिटिकल इकाॅनामी' से ली गई सामग्री के लिए उनके प्रति विशेष आभार प्रदर्शित करना चाहता हूँ। मैं समझता हूँ कि मैंने इन पुस्तकों का उद्धरणों में जितना प्रयोग किया है उससे इस बात का पर्याप्त अनुमान नहीं लगा सकता कि मैंने इनसे कितनी सामान्य सहायता ली है, इसलिए मैं इनका विशेष रूप से ऋण-भार प्रदर्शित करना चाहता हूँ।

दि लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स
फरवरी, 1932

लिथोनेल रॉबिन्स

विषय-सूची

प्रस्तावना	पृष्ठ v
मूल अंग्रेजी पुस्तक के दूसरे संस्करण की भूमिका	vii
मूल अंग्रेजी पुस्तक के पहले संस्करण की भूमिका	xiii

अध्याय 1

अर्थशास्त्र की विषय-वस्तु

1. विषय-प्रवेश	1
2. अर्थशास्त्र की "भौतिकवादी" परिभाषा	3
3. अर्थशास्त्र की "दुर्लभतावादी" परिभाषा	11
4. अर्थशास्त्र और विनिमय अर्थव्यवस्था	15
5. "भौतिकवादी" और "दुर्लभतावादी" परिभाषाओं की तुलना	19

अध्याय 2

उद्देश्य और साधन

1. विषय-प्रवेश	22
2. अर्थशास्त्र और उद्देश्य	22
3. अर्थशास्त्र और सौंदर्यशास्त्र	26
4. अर्थशास्त्र और औद्योगिकी	29
5. अर्थशास्त्र के सिद्धांत और आर्थिक इतिहास	34
6. इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या	38

अध्याय 3

आर्थिक "मात्राओं" की सापेक्षता

1. दुर्लभता का अर्थ	42
2. आर्थिक कल्याण की संकल्पना	42
3. भ्रष्ट मूर्तता का हेत्वाभास	45
4. आर्थिक सांख्यिकी की परिभाषा	49
5. काल-श्रेणियों का महत्व	54
6. "उत्पादन-वितरण" और "संतुलनात्मक" विश्लेषणों की तुलना	58

अध्याय 4

अर्थशास्त्र के सामान्यीकरणों का स्वरूप

1. विषय-प्रवेश 66
2. आर्थिक विश्लेषण के आधार 66
3. अर्थशास्त्र के नियम और "ऐतिहासिक-सापेक्षवाद" 72
4. अर्थशास्त्र और मनोविज्ञान 75
5. तर्कनापरक आचरण की पूर्वधारणा 85
6. अर्थमानव की काल्पनिक कथा 89
7. स्थैतिक और गत्यात्मक अर्थशास्त्र

अध्याय 5

अर्थशास्त्र के सामान्यीकरण और वास्तविकता

1. अर्थशास्त्र एक विज्ञान के रूप में 94
2. पूर्ति और मांग के सांख्यिकीय नियम 95
3. संस्थावादियों का "मात्रिक अर्थशास्त्र" 100
4. अनुभवाश्रित अध्ययन के कार्य 103
5. आर्थिक नियमों की अपरिहार्यता 108
6. आर्थिक नियमों की सीमाएँ 113
7. आर्थिक विकास के सिद्धांत की संभावना 117

अध्याय 6

अर्थशास्त्र का महत्व

1. विषय-प्रवेश 121
2. ह्रासमान सीमांत तुष्टिगुण का नियम 121
3. संतुलन सिद्धांत की तटस्थता 127
4. अर्थशास्त्र और नीतिशास्त्र 131
5. अर्थशास्त्र का महत्व 135
- अनुक्रमणिका 141

पारिभाषिक शब्द-सूची (हिन्दी-अंग्रेजी)

भंतरण संकट	Transfer crisis
अनधिमान वक्र	Indifference curve
अनार्थिक	Non-economic
अनुत्पादक	Unproductive
अपूर्ण प्रतियोगिता	Imperfect competition
अर्थ मानक	homo oeconomicus = economic man
अर्थशास्त्र का लाप्लेस	Economic laplace
अर्थशास्त्रीय नियम	Economic laws
आंतरिक भंतरपणन क्रियाएँ	Internal arbitrage operations
आधारतत्व	Postulate
आर्थिक इतिहास	Economic History
आर्थिक कार्यकलाप	Economic activity
आर्थिक कारक	Economic factor
आर्थिक घटना-चक्र	Economic phenomena
आर्थिक तुष्टि	Economic satisfaction
आर्थिक मात्राएँ	Economic quantities
आर्थिक विश्लेषण	Economic Analysis
आर्थिक विषय	Economic subject
आर्थिक सहायता	Subsidy
आर्थिक सांख्यिकी	Economic Statistics
इतिहासवादी संप्रदाय	Historical School
उत्पादन सिद्धांत	Theory of production
एकाधिकारी	Monopolist
कर-भार	Tax burden
कार्य-कारण शृंखला	Chain of causation

काल-विश्लेषण	Period analysis
काल-श्रेणियाँ	Time series
गत्यात्मक अर्थशास्त्र	Economic dynamics
गुणांक	Coefficient
घर	Variables
तर्कनापरक आवरण	Rational conduct
तुष्टिगुणवाद	Utilitarianism
दुर्लभता संबंध	Scarcity relationship
द्रव्य परिमाण सिद्धांत	Quantity Theory
धनात्मक नति	Positive inclination
धातुकोषवादी संप्रदाय	Currency school
नकद पूंजी	Liquid capital
निःशुल्क वस्तुएँ	Free goods
निगमन	Deductions
पूर्ण प्रतियोगिता	Perfect competition
प्रेक्ष्य आधार सामग्री	Observable data
फलन	Function
बाजार संबंधी नियम	Law of markets
भौतिक कल्याण	Material welfare
मंदी	Depression
मजदूरी सिद्धांत	Theory of wages
मवीत	Poll tax
मांग और पूर्ति के मात्रात्मक नियम	Quantitative laws of demand and supply
मांग मूल्य सापेक्षता	Elasticity of demand
मात्रात्मक अर्थशास्त्र	Quantitative Economics
मुक्त बाजार	Free markets
मुद्रा का परिमाण	Volume of money
मुद्रा परिचलन वेग	Velocity of circulation
मुद्रा सिद्धांत	Monetary theory
मूल्य निरपेक्ष	Inelastic

मूल्यवादी अर्थशास्त्र	Value economics
मूल्य सिद्धांत	Theory of value
मूल्यांकन मान	Scales of valuation
मूल्यों की घट-बढ़	Price fluctuations
मौसमी घट-बढ़	Seasonal movements
यादृच्छिक प्रति चयन	Random sample
रीतिविधान	Methodology
लागतों का प्रसार	Cost dispersions
वास्तविक विज्ञान	Positive science
वितरण सिद्धांत	Theory of distribution
वित्तीय प्रेरणा	Financial incentives
विनिमय अर्थव्यवस्था	Exchange economy
विश्व नकद आय	World money income
विषय-वस्तु	Subject-matter
व्यापार चक्र	Trade cycle
व्यावहारिक अर्थशास्त्र	Applied Economics
शुद्ध सिद्धांत	Pure theory
शूकर-दर्शन	Pig-philosophy
श्रमजीवी जनसंख्या	Working population
श्रम-विभाजन	Division of labour
श्रम-समय	Labour-time
संतुलन	Equilibrium
संरक्षणात्मक टैरिफ	Protective Tariffs
संस्थापक अर्थशास्त्री	Classical economists
संस्थावादी	Institutionalists
समुच्चय	Aggregate
सहसंबंध	Correlation
सांख्यिकीय नियम	Statistical laws
सापेक्षिक मूल्यांकन	Relative valuations
सामग्री, दिक्ता	Data
सामान्यीकरण	Generalisations

सूचकांक

स्थानीकरण

स्थिर संतुलन

स्फीति

ह्रासमान प्रतिफल नियम

ह्रासमान सीमांत तुष्टिगुण नियम

Index

Localisation

Stationary equilibrium

Inflation

Law of Diminishing Returns

Law of Diminishing Marginal Utility